विकार में पड़कर ये क्या कर डाला ओ इंसान
तेरे इन विकर्मों को देखकर शर्मा गया भगवान
बनाया उसने इस संसार को तेरे लिए सुखधाम
विकारों में पड़कर बनाया तूने इसको दुखधाम
पवित्र था संसार कहते थे जिसको शिवालय
तूने विकारों में जाकर इसको बनाया वेश्यालय
तन के भोग के साधन तूने कितने सारे जुटाए
इस चक्कर में तूने आत्मा के सारे गुण गंवाए
तेरे घिनोने पापों के बारे में कोई कुछ ना बोले
इसीलिए तूने जगह जगह पर अनाथाश्रम खोले
पाप करने का ये नशा तुझको इतना चढ़ गया
भोग भोगकर तेरा सारा विवेक ही बिगड़ गया
ये एक पाप ही जीवन में कितना दु:ख लाता है
काम विकार सबको आदि मध्य अंत रुलाता है
विकारों में फंसकर तूँ इंसान से बन गया हैवान
छोड़ दे सारे विकार अब समझाते हैं भगवान
पवित्रता की राह चुन ले और बन जा देव तुल्य
अवगुण त्यागकर भर ले अपने में नैतिक मूल्य
श्रीमत पर चलने की खा ले कसम तूँ आज

देवभूमि भारत की बचानी है तुझे ही लाज
अगर तूँ बाबा को पवित्र बनकर दिखायेगा
बाबा की नजरों में तूँ अमूल्य रत्न कहलायेगा
सारे दुःख संकटों से तुझे बाबा मुक्ति दिलाकर
सतयुग में तुझे सर्वोच्च देवी पद दिलाएगा
ॐ शांति